परमेश्वर से संघर्ष करना (कुश्ती लड़ना)

Wrestling with God

उद्देश्य (OBJECTIVE)

यह प्रशिक्षण विश्वासियों को यह समझने के लिए आमंत्रित करता है कि **परमेश्वर से "संघर्ष" करना** अस्वीकार नहीं बल्कि **निकटता और परिवर्तन** का मार्ग हो सकता है।
बाइबल में याकूब का संघर्ष हमें यह सिखाता है कि जीवन की चुनौतियों और असमंजस के समय परमेश्वर से **ईमानदारी से जूझना**, हमें नया नाम, नया उद्देश्य और नया आत्मिक बल दे सकता है।

सारांश (OVERVIEW)

- संघर्ष का उद्देश्य है — परिवर्तन और पहचान
- याकूब ने परमेश्वर से कहा: "मैं तुझे तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक तू मुझे आशीष न दे"
- संघर्ष के दौरान:
    - हम **अपनी सीमाएँ** पहचानते हैं
    - हम **परमेश्वर की महानता** को अनुभव करते हैं
    - हमें **नई पहचान और बुलाहट** मिलती है
- आत्मिक संघर्ष का परिणाम:
    - नया नाम (जैसे याकूब → इस्राएल)
    - बढ़ा हुआ विश्वास
    - परमेश्वर की गहन निकटता
- यह संघर्ष शिकायत नहीं है, बल्कि गहराई से जुड़ने की इच्छा है
- परमेश्वर हमें **रोकता नहीं**, वह हमें **परिवर्तित करता है**

संदर्भित बाइबल वचन (VERSES REFERENCED)

- उत्पत्ति 32:22-32
- होशे 12:3-5
- भजन संहिता 13
- मत्ती 26:36-44

अध्ययन के लिए प्रश्न (QUESTIONS FOR FURTHER STUDY)

1. आपने अपने जीवन में कब ऐसा समय महसूस किया जब आप परमेश्वर से "संघर्ष" कर रहे थे?

2. संघर्ष के दौरान परमेश्वर के साथ बने रहना आपको कैसे बदलता है?

3. क्या आप परमेश्वर के सामने **ईमानदारी से अपने संदेह और सवाल** रख पाते हैं? क्यों या क्यों नहीं?

4. संघर्ष से मिली **नई पहचान या दिशा** आपके जीवन या सेवकाई में कैसे प्रकट हुई है?

अधिक अध्ययन के लिए वचन पद (SCRIPTURE FOR FURTHER STUDY)

- यशायाह 64:8
- रोमियों 8:28
- इब्रानियों 4:15-16